Siddhanta's International Journal of Advanced Research in Arts & Humanities
Vol. 3, No. 3, January - February 2026

राजनीति और कानून: एक पारस्परिक संबंध का विश्लेषण

डॉ. अमित कुमार गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

वी.श. के.च. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डाकपत्थर, विकासनगर, देहरादून, उत्तराखंड

शोध सार:

राजनीति और कानून के मध्य गहरा संबंध रहा है, जो प्राचीन यूनानी विचारकों से लेकर आधुनिक लोक कल्याणकारी राज्य तक फैला हुआ है। यह शोध पत्र राजनीति को एक क्रिया के रूप में और राजनीति विज्ञान को उसके वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित करता है। शक्ति पृथक्करण, लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा, संयुक्त राष्ट्र संघ, तथा भारत और सोवियत संघ जैसे उदाहरणों के माध्यम से यह तर्क दिया गया है कि कानूनों की सफलता राजनीतिक संवाद और जनहित पर निर्भर करती है। रूस-यूक्रेन संघर्ष जैसे समसामयिक उदाहरण नीति निर्माण की विफलताओं को उजागर करते हैं। निष्कर्ष में जोर दिया गया है कि राजनीति और कानून एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

बीज शब्द: राजनीति, कानून, शक्ति पृथक्करण, लोक कल्याणकारी राज्य, नीति निर्माण, जन संवाद

परिचय

राजनीति मानव समाज का एक अभिन्न अंग रही है, जो राज्य, शासन, समाज और नैतिकता के तत्वों को समाहित करती है। प्राचीन यूनानी विचारकों जैसे प्लेटो और अरस्तू ने 'राजनीति' (Politics) शब्द का प्रयोग राज्यशास्त्र के अध्ययन के लिए किया, जिसमें शासन कला, नैतिक मूल्य और सामाजिक संगठन शामिल थे। आधुनिक विद्वान जैसे जॉर्ज जेलिनेक, एल. ट्रिट्स्के और आर.जी. गेल्टेल जैसे विचारकों ने भी इस विषय को 'राजनीति' ही कहा। जेलिनेक के अनुसार, राजनीति राज्य की संप्रभु शक्ति का अभ्यास है, जबकि ट्रिट्स्के इसे शक्ति के वितरण का विज्ञान मानते हैं।

आधुनिक संदर्भ में राजनीति विज्ञान राज्य और सरकार से संबंधित सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पहलुओं का अध्ययन है। आम नागरिक अक्सर राजनीति को व्यावहारिक कला (जैसे चुनाव, नीति निर्माण) और राजनीति विज्ञान को शैक्षणिक अध्ययन के रूप में भ्रमित करते हैं। राजनीति एक गतिशील क्रिया है, जबकि राजनीति विज्ञान उसका क्रमबद्ध, वैज्ञानिक विश्लेषण। यह पत्र इस संबंध को कानून के साथ जोड़ते हुए विश्लेषित करेगा, विशेषकर लोकतंत्र में नीति निर्माण और जन संवाद के संदर्भ में।

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना है: (1) राजनीति और कानून कैसे एक-दूसरे से जुड़े हैं? (2) लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा ने इस संबंध को कैसे प्रभावित किया? (3) भारत और सोवियत संघ जैसे उदाहरण क्या सिखाते हैं? विधि के रूप में गुणात्मक विश्लेषण, ऐतिहासिक केस स्टडी और समसामयिक उदाहरणों का उपयोग किया गया है।

राजनीति विज्ञान की परिभाषा और विकास

प्राचीन से आधुनिक परिप्रेक्ष्य

यूनानी दार्शनिकों ने राजनीति को राज्य के आदर्श रूप का अध्ययन माना। प्लेटो की 'रिपब्लिक' में राज्य को न्यायपूर्ण समाज के रूप में चित्रित किया गया, जबकि अरस्तू ने 'पॉलिटिक्स' में इसे सामूहिक कल्याण की कला कहा। मध्ययुग में थॉमस एक्विनास ने ईसाई नैतिकता को राजनीति से जोड़ा। आधुनिक काल में मैकियावेली ने 'द प्रिंस' में राजनीति को शक्ति प्राप्ति की यथार्थवादी कला बताया, जो नैतिकता से परे है।

बीसवीं शताब्दी में राजनीति विज्ञान एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में उभरा। हेरोल्ड लासवेल ने इसे 'कौन क्या पाता है' के रूप में परिभाषित किया, जबकि डेविड ईस्टन ने 'इनपुट-प्रोसेस-आउटपुट' मॉडल प्रस्तुत किया। भारतीय संदर्भ में के.पी. भट्टाचार्य ने राजनीति को राज्य की शक्ति संरचना का अध्ययन कहा। राजनीति व्यवहारिक है—नीति निर्माण, चुनाव, गठबंधन—जबकि राजनीति विज्ञान तुलनात्मक, सैद्धांतिक विश्लेषण करता है।

राजनीति और राजनीति विज्ञान का अंतर

आमजन राजनीति को 'गंदा खेल' मानते हैं, लेकिन राजनीति विज्ञान इसे वैज्ञानिक बनाता है। राजनीति क्रिया है (जैसे अभियान चलाना), विज्ञान उसका अध्ययन (जैसे मतदाता व्यवहार विश्लेषण)। यह भेद महत्वपूर्ण है क्योंकि लोकतंत्र में राजनीतिक क्रियाएं कानूनों को आकार देती हैं।

शक्ति पृथक्करण और कानूनी ढांचा

संविधान में शक्ति पृथक्करण (Separation of Powers) कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के मध्य शक्तियों का बंटवारा सुनिश्चित करता है। मॉन्टेस्क्यू के सिद्धांत के अनुसार, व्यवस्थापिका कानून बनाती है, कार्यपालिका उसे लागू करती है, और न्यायपालिका व्याख्या करती है। यदि न्यायपालिका कानून को असंवैधानिक पाती है, तो उसे अस्वीकृत कर सकती है (जैसे भारत में न्यायिक समीक्षा)।

राज्य कानूनों का एकमात्र लागूकर्ता है, जो जनकल्याण के लिए बाध्य है। कानून राज्य-जनता के मध्य सेतु हैं। यदि नीतियां जनविरोधी हों, तो विरोध (जैसे आंदोलन) उत्पन्न होता है, जो सरकार को अस्थिर करता है।

लोक कल्याणकारी राज्य का उदय

बीसवीं शताब्दी ने प्रथम (1914-1918) और द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) देखे, जिसमें करोड़ों मौतें हुईं। प्रथम युद्ध के बाद वुड्रो विल्सन के प्रयास से लीग ऑफ नेशंस (1919) बनी, लेकिन इसकी विफलता से द्वितीय युद्ध हुआ। द्वितीय युद्ध के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ (UN, 1945) की स्थापना हुई, जिसके अधीन 1948 में यूनिवर्सल डिक्लेरेशन ऑफ ह्यूमन राइट्स (UDHR) जारी हुआ। एशिया-आफ्रीका के नवस्वतंत्र देशों (जैसे भारत, 1950 संविधान) ने इन्हें अपनाया।

लोक कल्याणकारी राज्य (Welfare State) ने राज्य को जनसेवक बनाया—शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार प्रदान करना। बी.आर. अंबेडकर ने भारत में इसे मौलिक अधिकारों से जोड़ा। यह अवधारणा राजनीति को कानून-केन्द्रित बनाती है।

ऐतिहासिक और समसामयिक उदाहरण

सोवियत संघ का पतन

सोवियत संघ (USSR) ने शीत युद्ध में अमेरिका से हथियार प्रतिस्पर्धा में जीडीपी का 25% खर्च किया, जिससे 1980s में अन्न संकट आया। ब्रेड की लंबी कतारें, गरीबी फैली। मिखाइल गोर्बाचेव ने 1985 में ग्लास्नोस्ट (खुलापन) और पेरेस्त्रोइका (पुनर्गठन) शुरू कीं, लेकिन ये विफल रहीं। 1991 में USSR 15 गणराज्यों में विखंडित हो गया। यह दर्शाता है कि जनविरोधी नीतियां राज्य को नष्ट करती हैं।

भारत में मोदी नीतियां (2014-वर्तमान)

2014 और 2019 में भाजपा को पूर्ण बहुमत मिला, जो जनसमर्थन दर्शाता है। नोटबंदी (2016) भ्रष्टाचार विरोधी थी, जिसे जनता ने सराहा। सर्जिकल स्ट्राइक (2016) ने राष्ट्रीय

सुरक्षा पर विश्वास बढ़ाया। अनुच्छेद 370 हटाना (2019) ने जम्मू-कश्मीर को केंद्रशासित बनाया, जिसे राष्ट्रवादी वर्ग ने स्वागत किया।

किंतु किसान बिल (2020) विफल रहा—प्रचार की कमी से 1 वर्ष आंदोलन चला, 700+ मौतें हुईं। सरकार को वापस लेना पड़ा। इसके विपरीत, नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में 2 लाख सुझाव लिए गए, स्किल-आधारित शिक्षा पर जोर, जिसे समर्थन मिला। ये उदाहरण संवाद की आवश्यकता दिखाते हैं।

रूस-यूक्रेन संघर्ष: नीति विफलता का केस स्टडी

2022 से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध (जनवरी 2026 तक 10+ माह) ने लाखों मौतें और 10 मिलियन विस्थापित पैदा किए। रूस की चिंता NATO विस्तार थी—यूक्रेन NATO में शामिल हो रहा था। राष्ट्रपति पुतिन ने 24 फरवरी 2022 को आक्रमण किया। यूक्रेन ने NATO सहायता ली, लेकिन कूटनीतिक संवाद की कमी से संघर्ष लंबा खिंचा।

यह राजनीति-कानून संबंध दर्शाता है: अंतरराष्ट्रीय कानून (UN चार्टर) उल्लंघन हुआ, लेकिन शक्ति राजनीति हावी रही। यदि यूक्रेन रूस की सुरक्षा चिंताओं को संबोधित करता, तो टकराव टल सकता था।

नीति निर्माण में जन संवाद की भूमिका

लोकतंत्र में नीतियां जनकल्याण के लिए होती हैं, लेकिन सफलता संवाद पर निर्भर। सत्ताधारी दल लागू करते हैं, विपक्ष आलोचना। अच्छी नीति (जैसे NEP) प्रचार से सफल होती है, अन्यथा विफल (किसान बिल)। राजनीतिक वार्तालाप नीतियों को वैधता देता है। सरकारें जनता को प्रेरित करती हैं—2014-2019 भारत इसका उदाहरण।

निष्कर्ष

राजनीति और कानून एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। राजनीति नेताओं द्वारा चुनी जाती है, कानून बनाती है, न्यायपालिका व्याख्या। जनविरोधी नीतियां पतन लाती हैं (USSR, रूस-यूक्रेन)। सफलता संवाद, प्रचार और जनहित में है। भारत जैसे लोकतंत्रों में यह और स्पष्ट। भविष्य में डिजिटल संवाद नीतियों को मजबूत करेगा।

संदर्भ सूची

1. Aristotle. (350 BCE). *Politics*. Translated by B. Jowett. Oxford University Press.
2. Plato. (380 BCE). *The Republic*. Translated by G.M.A. Grube. Hackett Publishing.
3. Jellinek, G. (1880). *System der subjektiven öffentlichen Rechte*. T. Fisher.
4. Lasswell, H. D. (1936). *Politics: Who Gets What, When, How*. McGraw-Hill.
5. Easton, D. (1953). *The Political System*. Knopf.
6. Montesquieu. (1748). *The Spirit of the Laws*. Translated by T. Nugent. Hafner Press.
7. United Nations. (1948). *Universal Declaration of Human Rights*. UN General Assembly.
8. Gorbachev, M. (1987). *Perestroika: New Thinking for Our Country and the World*. Harper & Row.
9. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
10. BBC News. (2022-2026). "Russia-Ukraine War Updates." Retrieved from https://www.bbc.com/news/topics/c2vdnvdg989t.
11. Bhambhri, C. P. (1992). *Politics in India*. Shipra Publications.
12. Ambedkar, B. R. (1949). *Constituent Assembly Debates*. Government of India.